अनुवाद के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा (AI) की प्रासंगिकता: हिंदी भाषा के संदर्भ में

रीना, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़ E-Mail : rv88069@gmail.com
प्रो. डॉ. शिवचरण शर्मा, पर्यवेक्षक, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़

भारत एक बहुभाषी देश रहा है जहां अनेक प्रकार की भाषाएं बोली जाती है। भाषाओं की अनेकरूपता के पूरे भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बांधने की कड़ी हिंदी भाषा है। अतः भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का पर्याप्त महत्व है। आज के इस तकनीकी युग में कृत्रिम मेधा अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रचलन है। इसका अर्थ यह है मशीनों में मानव जैसी बुद्धिमता का विकास करना इस तकनीक में अनेक प्रकार की समस्याओं को हल करने निर्णय लेने और भाषा को समझने की क्षमता होती है। मशीनी अनुवाद के कुछ सिस्टम और ऐप्स है अनुवादिनी, गूगल अनुवाद, कॉन्टैक्ट ट्रांसलेशन, मेमोरी, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर, हाई ट्रांसलेट आदि। अनुवाद के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं, विशेषकर बहुभाषी समाजों में संवाद को सरल और सुलभ बनाने के लिए। यह शोध पत्र हिंदी भाषा के संदर्भ में AI आधारित अनुवाद की प्रासंगिकता का अध्ययन करता है। इसमें AI तकनीकों द्वारा हिंदी अनुवाद में होने वाले लाभ, चुनौतियाँ और संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है। शोध में यह पाया गया कि AI अनुवाद टूल्स, जैसे कि गूगल ट्रांसलेट और अन्य मशीन लर्निंग आधारित प्रणालियाँ, गति और कुशलता प्रदान करती हैं, लेकिन ये हिंदी की व्याकरणिक जटिलताओं, सांस्कृतिक संदर्भों और भावार्थ की सटीकता में सीमित हैं।

इस अध्ययन के अंतर्गत मानव और AI अनुवाद के बीच तुलनात्मक अध्ययन, उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रियाएँ, और अनुवाद में के सामाजिक और भाषाई प्रभावों का विश्लेषण किया गया। शोध से यह निष्कर्ष निकला कि हिंदी भाषा में आधारित अनुवाद के लिए तकनीकी सुधार और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए नई विधियों का विकास आवश्यक है। यह शोध हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में की वर्तमान स्थिति और इसके भविष्य के लिए एक मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है।